त्रैमासिक

सरस्वती सुमन

अक्टूबर-दिसम्बर २०१२

साहित्य एवं संस्कृति का सारस्वत अभियान

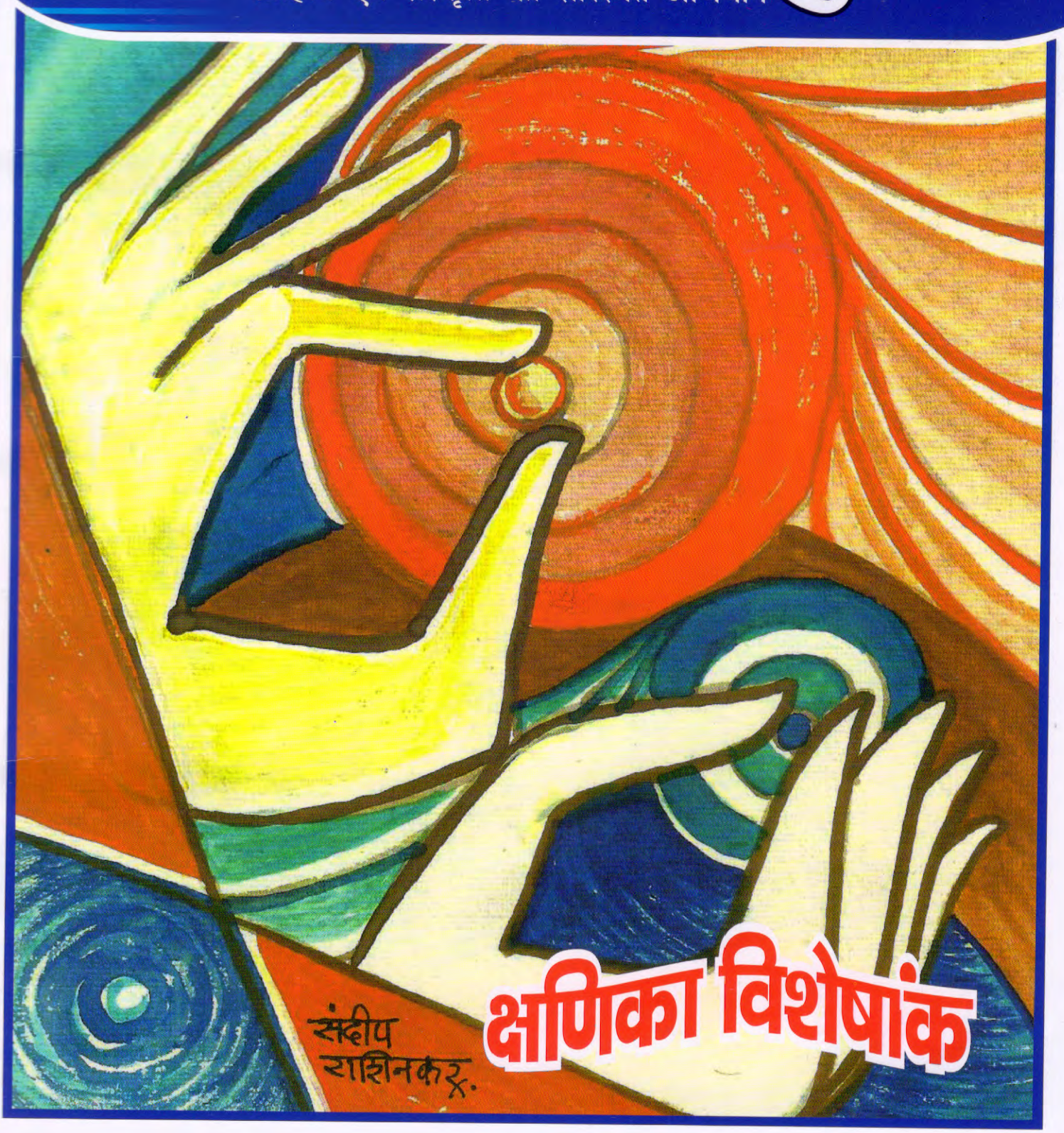

क्षणिका विशेषांक

क्षणिकाएँ

डॉ. सुधा ओम ढीगंरा

आचमन

भोर की पहली किरण
पाम वृक्ष के पत्तों पर पड़ी
ओस की कुछ बूँदों को
निहार रही हैं
जैसे
खुली हथेली
पर पड़ी
पानी की कुछ बूँदों को
आचमन से पहले
होंठ निहारते हैं।

हादसे

जीवन के यज्ञ में
सामग्री बन
स्वाहा होती रही
हादसों के
मंत्रों का
उच्चारण थमा नहीं।

जिंदगी

जीवन की भट्ठी में
भावनाएँ
संवेग
अभिलाषाएँ
इच्छाएँ
दानों सी
भून डालीं
जिंदगी
फिर भी खुश न हुई
बालू सी हाथ से सरक गई।

भूख

माँ से चिपटा
भूख से
तड़पता बच्चा
मर गया
शर्मिंदा भूख ने
माँ के पेट में
दम तोड़ दिया।

पहचान

रिश्तों की
गहरी खोह में
उनकी गर्माहट लेने
जब भी जाने की कोशिश की
उपेक्षाओं का विषधर
फन फैलाए खड़ा था।
कई बार डसा उसने
रिश्तों की पहचान फिर भी न हुई।

पतंग

परदेस के आकाश पर
देसी मांजे से सनी
अकाँक्षाओं से सजी
ऊँची उड़ती मेरी पतंग
दो संस्कृतियों के टकराव में
कई बार कटते-कटते बची
शायद देसी मांजे में दम था
जो टकराकर भी कट नहीं पाई
और उड़ रही है
विदेश के ऊँचे-खुले आकाश पर
बेझिझक, बेखौफ···!

संपर्क : 101 Guymon Court
Mohrisville, NC, 27560
UUS
मोबा.-919-801-0672

क्षणिकाएँ

संदीप 'सरस'

हद···

तुम्हारी हद
जब बढ़ जाती है
हद से ज्यादा
तभी टूटती है
हमारी हद···

अँधेरा

तेरे···
महलों के उजाले
सर पटककर
दम तोड़ देते हैं
मेरी झोपड़ी की चौखट पर
तभी तो···
मोहब्बत के आँगन में
छाया रहता है
इतना अँधेरा···

बिस्तर···

बनाकर···
बाँह का तकिया
मैं सोता हूँ गहरी नींद
मेरे फुटपाथ से
अकसर हार जाता है
महलों का बिस्तर···!!

संपर्क : संदीप गारमेंट्स
मोबा. शंकरगंज, बिसवां, तहसील रोड
जनपद-सीतापुर (उ.प्र.)-261201
मोबा.-9450382515